परस्पराक्षिसादृश्यमदूरोज्झितवर्त्मसु ।

मृगद्वन्द्वेषु पश्यन्तौ स्यन्दनाबद्धदृष्टिषु ।।40।।

अन्वय अदूरोज्झितवर्त्मसु स्यन्दनाबद्धदृष्टिषु मृगद्वन्द्वेषु परस्पराक्षिसादृश्यं पश्यन्तौ (जग्मतुः)।

अनुवाद (रथ के) मार्ग को छोड़कर (विश्वास के कारण) पास ही खड़े हुए तथा रथ को एकटक दृष्टि से देखते हुए मृगों के जोड़ों में वे दोनों आपस में एक.दूसरे के नेत्रों की समानता (देखते हुए जा रहे थे)

टिप्पणियां

परस्पर परस्य परस्य अक्ष्णाम् सादृश्यम् (षष्ठी तत्पुरुष), एक-दूसरे की आँखों में समानता। टीकाकार मल्लिनाथ का विचार है कि राजा दिलीप ने सुदक्षिणा के नेत्रों की समानता मृगियों के नेत्रों में देखी तथा सुदक्षिणा ने महाराजा दिलीप के नेत्रों की समानता मृगों के नेत्रों में देखी।

अदूरोज्झित.न दूरम् अदूरम् (नञ् तत्पुरुष), अदूरे उज्झितं वर्त्म यैः तै अदूरोज्झितवर्त्मनः (बहुव्रीहि), तेषु। 'मृगद्वन्द्वेषु' का विशेषण है। वे हरिण जो विश्वास के कारण रथ के मार्ग से बहुत दूर नहीं हटे थे। अतः बहुत पास ही खड़े थे। मृगों की निर्द्वन्द्वता की ध्वनि प्राप्त होती है।

विशेष इससे प्रतीत होता है कि तपोवन में रहने वाले मृग निर्भय थे। उन्हें यह शंका नहीं थी कि कोई उन्हें पकड़ लेगा या मार डालेगा। इसलिए राजा का रथ देखकर भी वे

रथ से बहुत दूर नहीं हटे अपितु रथ के लिए मार्ग छोड़ कर निकट में ही खड़े रहे। उन्हें राजा के रथ अथवा राजा या रानी से कोई भय नहीं लग रहा था। वे विश्वास के कारण निर्भय होकर खड़े थे। अपनी धर्मनिष्ठा के कारण से ही प्राचीन राजा प्राणी मात्र की श्रद्धा, विश्वास, निर्भरता आदि के पात्र बनते थे।

स्यन्दनाबद्धदृष्टिषु स्यन्दन अर्थात् रथ। आबद्ध-बन्धे हुए। स्यन्दने आबद्धाः दृष्टयः यै,: ते, स्यन्दनाबद्धदृष्टयः तेषु, (बहुव्रीहि); जिनकी (उत्सुक) दृष्टि रथ पर लगी हुई थी। प्रायः यही भाव कालिदास ने स्वकीय नाटक अभिज्ञानशाकुन्तल में भागते कृष्णसार (श्याम मृग) के वर्णन में दिया है-**मुहुरनुपतति स्यन्दने बद्धदृष्टिः।** (अभि. शा., प्रथम अंक)।

मृगद्वन्द्वेषु मृगद्वन्द्व मृग का जोड़ा। मृगाणां द्वन्द्वानि इति मृगद्वन्द्वानि, (षष्ठी तत्पुरुष), तेषु।